- इसकी उत्तरी सीमा एक अनियमित रेखा है, जो कच्छ से अरावली पर्वत के पश्चिम की ओर घूमती हुई दिल्ली के निकट पहुँचती है।
- इसका एक छोर छोटानागपुर की पठार होते हुए मेघालय की पहाड़ियों तक जाती है।

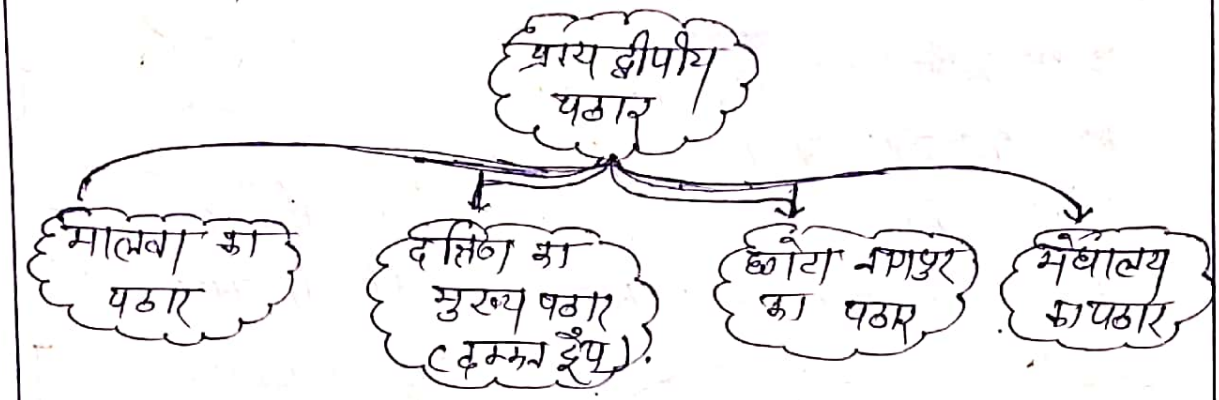

* मालवा पठार :- यह लावा का पठार है।

- यह मध्य प्रदेश में पड़ता है, इस पठार पर प्रमुख शहर बसे हैं— इंदौर, ग्वालियर, लश्कर, भोपाल etc.

* बुंदेलखंड :-

- उत्तरप्रदेश के जिले – झाँसी, हमीरपुर, बाँदा, ललितपुर
- मध्यप्रदेश " ⟹ टिकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सागर।

* मेघालय का पठार :- इस पठार पर गारो खासी जयंतियाँ पहाड़ी स्थित है।

* छोटानागपुर :- यह पूर्वी भारत में स्थित पठार है, इसके अंतर्गत झारखण्ड का अधिकतर हिस्सा आता है।

2. * दक्कन का पठार :-

- यह त्रिभुजाकार पठार, पूर्वी तथा पश्चिमी घाटें, सतपुड़ा, मैकाल तथा राजमहल पहाड़ियों के बीच 7 लाख वर्ग km क्षेत्र में विस्तृत है, इसकी ऊँचाई 500 – 1000 m है।
- इसे विशाल प्रायद्वीपीय पठार के नाम से जाना जाता है।

भारत का विशालतम पठार है। दक्षिण भारत का मुख्य भूभाग इसी पठार पर स्थित है।

- इसकी उत्तरी सीमा सतपुड़ा और विंध्याचल पर्वत श्रृंखला और पूर्वी तथा पश्चिमी सीमा क्रमशः पूर्वी घाट एवं प० घाट द्वारा निर्धारित होती है।
- दक्कन का पठार सतपुड़ा, महादेव तथा मैकाल श्रृंखला से भेजा नीलगिरी पर्वत के बीच अवस्थित है। इसे तीन पठारों में विभाजित किया गया है।

चित्र• दक्कन प्रदेश व द० का पठार

तीन पठार

- **महाराष्ट्र का पठार**
  - → काली मृदा से परिपूर्ण
- **आंध्रप्रदेश व तेलंगाना पठार**
  - → तेलंगाना पठार व
  - → रायलसीमा पठार
- **कर्नाटक पठार**
  - → मैसूर का पठार

4. तटीय मैदान → **तटीय मैदान**

- **प० तटीय मैदान**
  - → अरब सागर से छूती हुई यह ऊपर में गुजरात से लेकर तमिलनाडु के कन्याकुमारी तक विस्तृत है।
  - → गुजरात के कच्छ; कोंकण तट गोवा तट कर्नाटक तट तथा केरल का मालाबार तट व कन्याकुमारी में स्थित है।
  - → कई बंदरगाह हैं।
- **पूर्वी तटीय मैदान**
  - → यह अपेक्षाकृत चौड़ी पट्टी वाली मैदान है। जो उड़ीसा से तमिलनाडु तक फैला।
  - → कम बंदरगाह
  - → नदीयाँ डेल्टा बनाती
  - → उड़ीसा का उत्तरी सरकार और कोरो मंडल तट

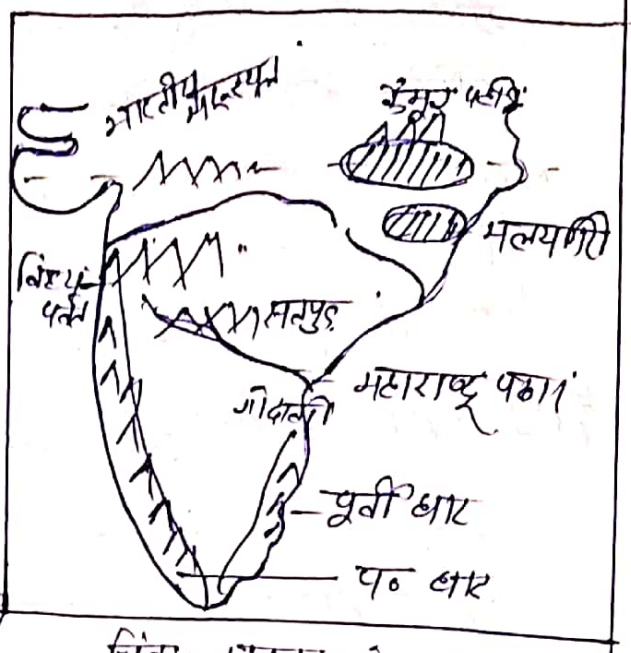

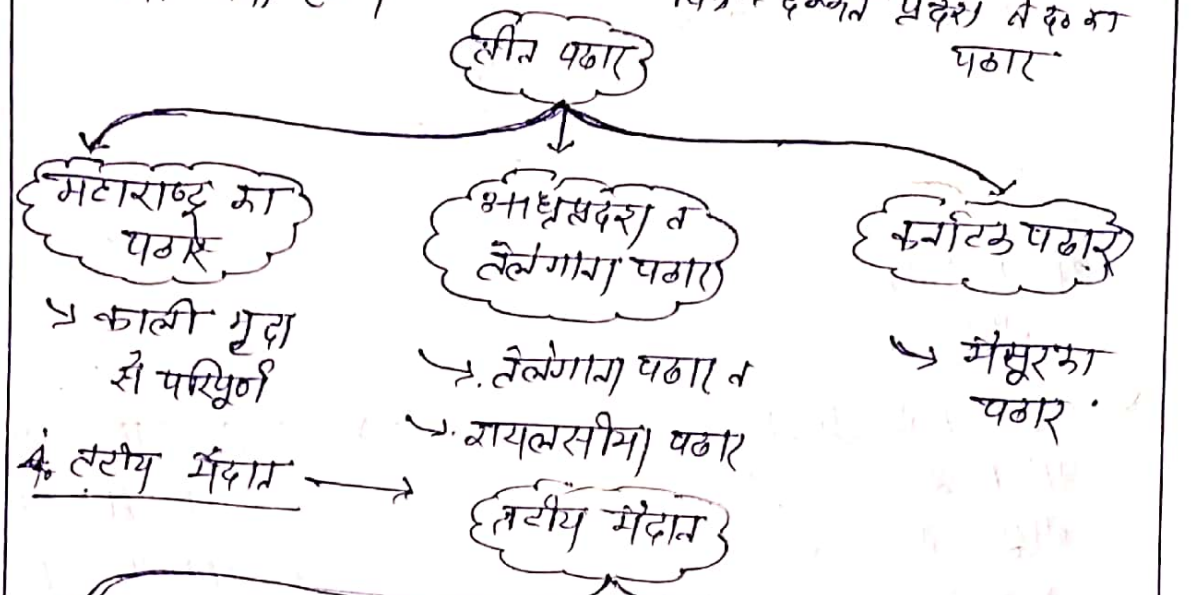

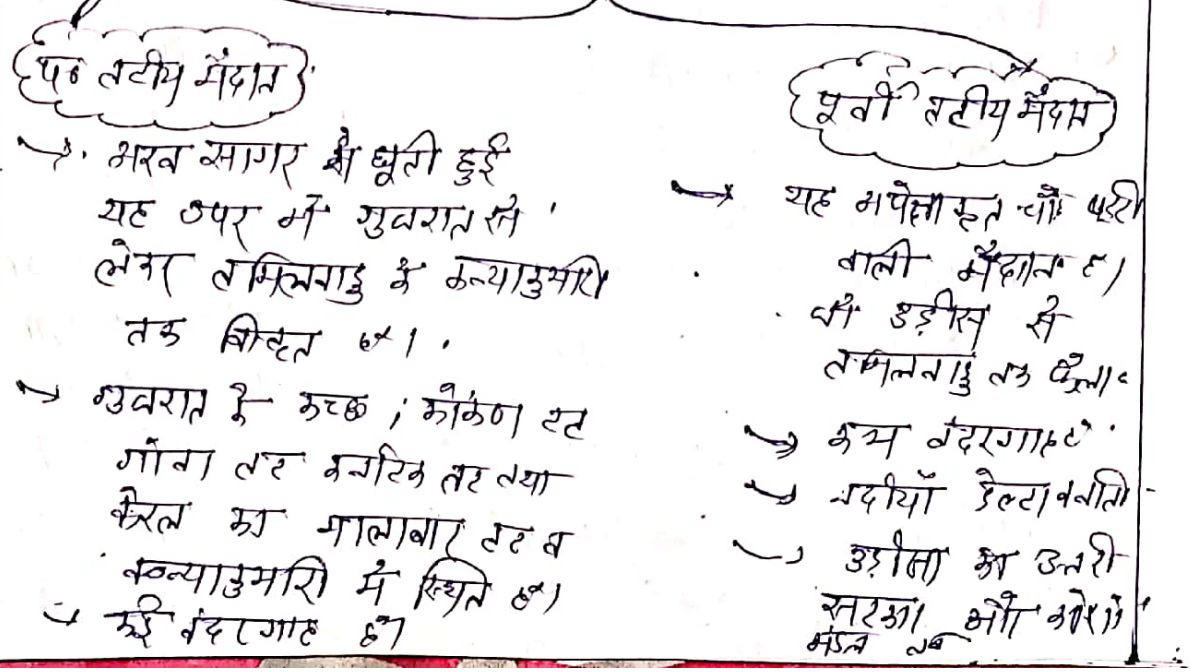

[5]. भारतीय मरुस्थल :-

- विशाल भारतीय मरुस्थल अरावली पहाड़ियों से उत्तर पूर्व में स्थित है, यह एक ऊबड़ खाबड़ भूतल है; जिसपर बहुत से अनुदैर्ध्य रेतीले टीले और बरखान पाए जाते हैं।
- यहाँ वार्षिक वर्षा 150 m.m से कम होती है, जिसके परिणामस्वरूप यह एक शुष्क और वनस्पति रहित प्रदेश है।

[6]. द्वीप समूह :- भारत में दो द्वीप समूह हैं -

- एक बंगाल की खाड़ी में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा दूसरा अरब सागर में लक्षद्वीप समूह शामिल है।

भारतीय द्वीप समूह

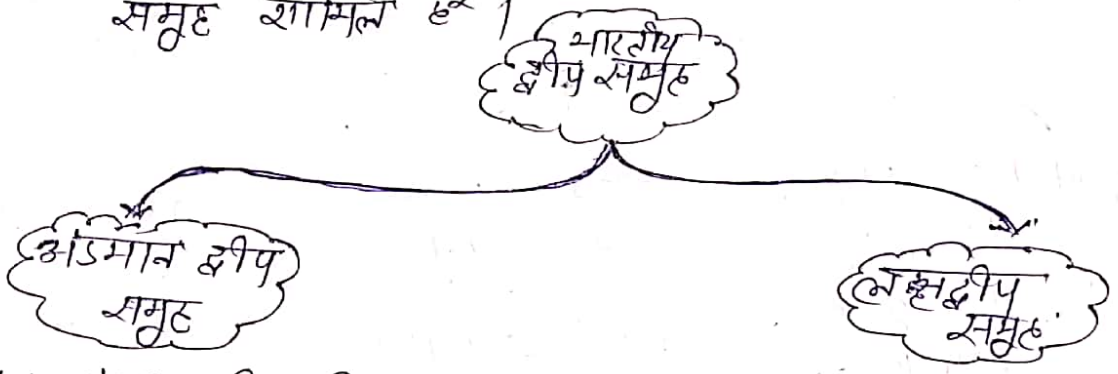

अंडमान द्वीप समूह

- बंगाल की खाड़ी में स्थित इस द्वीप समूह में लगभग 572 द्वीप हैं, इसमें
- अंडमान द्वीप तथा निकोबार द्वीप समूह शामिल हैं।
- यह जलमग्न पर्वतों का शिखरित हिस्सा है, तथा यहाँ एक मात्र ज्वालामुखी मौजूद है।

लक्षद्वीप समूह

- अरब सागर के द्वीपों में लक्षद्वीप तथा मिनीकाय द्वीप शामिल हैं।
- यह प्रवालों से निर्मित है।
- यह 8° उत्तरी अक्षांश से 11° उत्तरी अक्षांश के मध्य विस्तृत है।

इसप्रकार स्पष्ट है की भारत की भू-आकृति विविधताओं से परिपूर्ण है, यह कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तथा तथा उ० - द० तथा अरुणाचल प्रदेश से गुजरात तक पू० - प० में विस्तृत है।

Scanned with CamScanner

Q1(b) → प्रायद्वीपीय नदी प्रणाली और हिमालय की नदी प्रणाली के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

Ans →

भारत में सैंकड़ों छोटी - बड़ी नदियाँ हैं, जो देश के विभिन्न भागों में प्रवाहित होती हैं, नदियाँ महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन हैं और भारत के लोगों को जीवन प्रदान करती हैं। भारत का अपवाह तंत्र यहाँ की स्थलाकृति पर निर्भर करता है।

★ भारतीय नदी तंत्र का विकास :—

भारतीय नदियों का वर्तमान स्वरूप जानने से पहले उनका विकास जानना होगा। —

- भारतीय नदी तंत्र का वर्तमान स्वरूप नदी विकास की एक लंबी प्रक्रिया का परिणाम है।
- नदी तंत्र के विकास के आधार पर भारतीय नदियों को दो वृहत भागों में बाँटा जाता है।

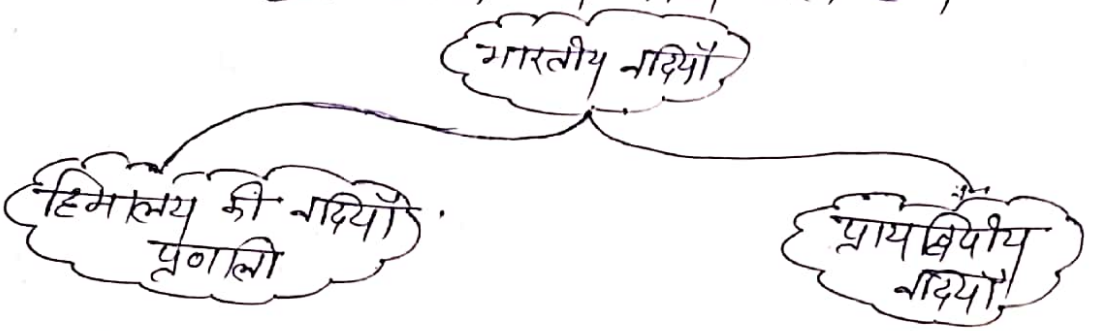

1. हिमालय की नदियाँ :—

→ हिमालय से तीन मुख्य नदी तंत्र प्रवाहित होती हैं, जिनके नाम पश्चिम से पूर्व की ओर सिंधु, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र हैं।

→ ये तीनों तंत्र विकास के एक लंबे तथा उतार चढ़ाव वाले इतिहास से गुजरे हैं।

→ ये नदियाँ तिब्बती उच्च प्रदेश के दक्षिणी ढाल से निकलती हैं, और हिमालय के अक्ष के समानान्तर अनुदैर्ध्य द्रोणियों में बहने के पश्चात मैदानों तक पहुँचने के लिए पर्वतों के श्रृंगों को काट कर अचानक

Scanned with CamScanner

दक्षिण की ओर मुड़ जाती है।

चित्र: भारत अपवाह (हिमालय व प्रायद्वीपीय नदियाँ).

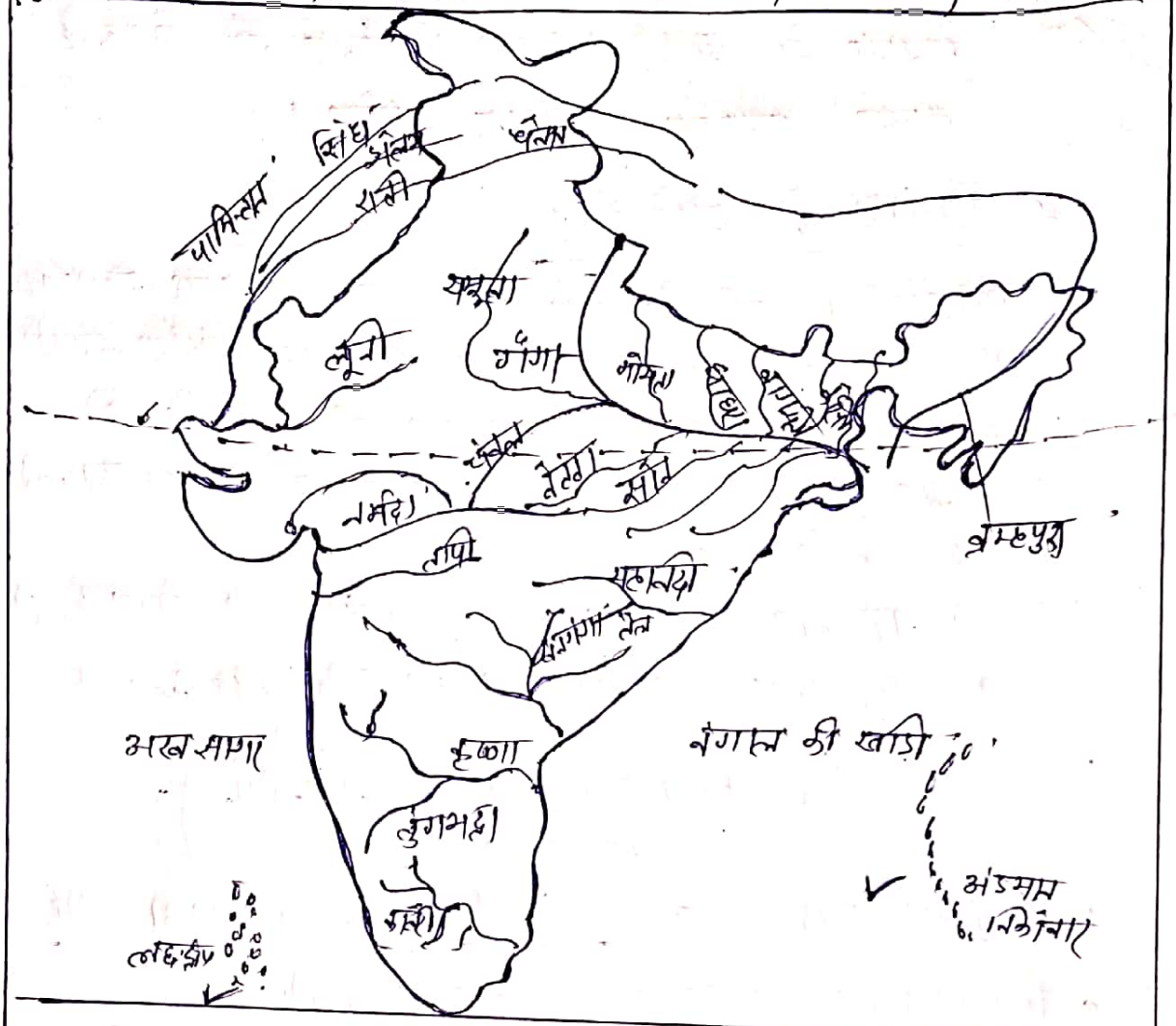

• सिंधु सतलज, अलकनंदा गंडक, कोसी व ब्रह्मपुत्र गहरे महाखड्डों को बनाती हुई आगे बढ़ती है।

• इन महाखड्डों से पता चलता है कि ये नई नदियाँ हैं।

* हिन्द ब्रह्म परिकल्पना :-

→ भू गर्भ वैज्ञानिकों का विश्वास है कि इन नदियों के विकास की विभिन्न अवस्थाओं को शिवालिक पहाड़ियों के तलछटों के अध्ययन से खोजा जा सकता है।

→ हिन्द ब्रह्म नदी द्वारा बड़े पैमाने पर किए गए निक्षेप का प्रमाण है।

→ बाद में यह विशाल नदी निम्नलिखित तीनों अथवा उपतंत्रों में विच्छेदित हुई :-

(i) सिंधु नदी

(ii) पंजाब में सिंधु नदी की पाँचों सहायक नदियाँ (सतलज, व्यास, रावी, चेनाब, झेलम)

Scanned with CamScanner

(iii) गंगा तथा हिमालय से निकलने वाली उसकी सहायक नदियाँ।

(iv) असम में ब्रह्मपुत्र तथा हिमालय से निकलने वाली उसकी सहायक नदियाँ।

2. प्रायद्वीपीय नदियाँ :-

* प्रायद्वीपीय नदियों की चौड़ी, उथली तथा लगभग संतुलित घाटियाँ इस तथ्य की ओर संकेत करती हैं, कि ये नदियाँ हिमालय की नदियों की तुलना में काफी अधिक लम्बे समय से प्रवाहित हो रही हैं।

→ प्रायद्वीपीय भाग में जल विभाजक प० घाट हैं, जो पश्चिमी तट के बहुत ही निकट स्थित हैं।

हिमालय तथा प्रायद्वीपीय नदियों में अंतर

* हिमालय पर्वत की नदियाँ	* प्रायद्वीपीय पठार की नदियाँ
• हिमालय पर्वत की नदियाँ अधिक लंबी हैं।	• कम लंबी
• इनके जलग्रहण क्षेत्र काफी बड़े हैं।	• अपेक्षाकृत छोटे हैं।
• हिमालयी नदियों की संख्या अधिक है।	• नदियों की संख्या कम है।
• ये हिमाच्छादित प्रदेशों से निकलती हैं, और बर्फ के पिघलने से सालभर जल प्राप्त करती हैं।	• ये वर्षा पर निर्भर रहती हैं इसलिए ग्रीष्म ऋतु में सूख जाती हैं।
• गहरे गार्ज का निर्माण करती हैं।	• ये उथली घाटियों में बहती हैं।
• ये विसर्प बनाती हैं, और मार्ग भी बदल लेती हैं	• ये अपेक्षाकृत सीधा मार्ग बनाती हैं और अपना मार्ग नहीं बदलती।

Scanned with CamScanner

हिमालय पर्वत की नदियां	प्रायद्वीपीय पठार की नदी
• हिमालयी नदियाँ जलपरिवहन व सिंचाई के अनुकूल है।	• ये जलपरिवहन व सिंचाई के अनुकूल नहीं है।
• ये अपने विकास की बाल्यावस्था में है।	• ये विकास की प्रौढ़ावस्था में है।
• हिमालयी नदीयाँ पूर्ववर्ती है।	• ये अनुवर्ती है।
• ये बड़े बड़े डेल्टा का निर्माण करती है, गंगा ब्रह्मपुत्र विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है।	• ये अपेक्षाकृत छोटे डेल्टा बनाती है। नर्मदा तथा तापी नदियों ने डेल्टा के स्थान पर ज्वारनदमुख बनाया है।

इसप्रकार भारतीय नदियाँ भारत के संपूर्ण क्षेत्र में अपवाह तंत्र का निर्माण करती है, हिमालयी नदियाँ भारतीय कृषि को एक नया जीवन तंत्र प्रदान करती है, वही प्रायद्वीपीय नदीयाँ दक्षिणी भाग में जीविकोपार्जन हेतु कुछ फसलों के उत्पादन में सहयोग करती है, व विभिन्न आवश्यकताएँ पूरी करती है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के आधार है।

Scanned with CamScanner